

Rs. 10/-



Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 12, December 2014





Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 12, December 2014

वर्ष 19, अंक 12, दिसंबर 2014

Editor / संपादक

Manas Ranjan Mahapatra

मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण

Deepak Kumar Gupta

दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva

सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी

Narender Kumar

नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार

Raj Kumar Ghose

राज कुमार घोष

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd. 203-204, DSIDC Sheds, Ph-I, Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

"I Learn Scientific Temper from ...	1
सात समुंदर डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Uttarakhand : Abode...	Aman Kumar Gupta 7
Varanasi : The ...	Gautami Singh 9
असम : काजीरंगा...	कामिनी शर्मा 11
Chennai : Endowed...	Ashish Kumar Gupta 14
Jammu and Kashmir	Pratik Kumar Jha 16
दिल्ली	दीपशिखा 18
Mystical Shirdi.	Dharmesh Kumar 21
My first train journey	Himalaya Kumar 23
हिमाचल प्रदेश का...	मोहम्मद सिराजुद्दीन अंसारी 24
Sarnath : Land of...	Nitish Kumar 26
लखनियादरी : पहाड़...	तनुजा शर्मा 27
Tourists' Delight...	Himadri Singh 29
Jaipur : The Pink City	Nidhi Sharma 31

Editorial Address/संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

"I Learn Scientific Temper from Children"

On the occasion of the 88th birthday of Prof. Yash Pal, one of the icons of science communications in the country, National Centre for Children's Literature of National Book Trust, India organised an interface with Prof. Yash Pal on the topic *Developing Scientific Temper in Children* at NBT Conference Room, Vasant Kunj, New Delhi on 26 November 2014. The programme began with an invocation song by the students of the Akshay Pratishthan and a welcome address by Dr M A Sikandar, Director, NBT.

Deliberating on the occasion, Prof. Yash Pal observed that, "we often talk about developing scientific temper in children but I feel that we, the grown-ups should learn from children. *I learn scientific temper from children,*" he said. Giving instance of a child who was searching for his elder brother, who had gone out to listen to the speech of Shri Jawaharlal Nehru, thought of calling Nehruji and how telephone was picked by Nehruji himself, he observed that scientific temper is behavioral than theoretical.

While introducing the theme, Dr Shekhar Sarkar, children's reading habit promotion activist also felt that scientific temper is not just the domain of the scientists, it is a language of common people. Participants in the



meeting, especially children present on the occasion also interacted with Prof. Yash Pal and asked him several questions related to the topic. Ms Surekha Sachdeva from NCCL offered vote of thanks. Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor, NCCL-NBT coordinated the programme.

Workshop on Creative Writing

This special issue carries the works of the children developed in a Workshop organized by National Centre for Children's Literature of National Book Trust, India in collaboration with Indian Railways at DLW Inter College, Varanasi on 14-15 November 2014. The theme of the workshop was *Travelogue Writing* and participants were first made aware of nuances of creative writing. Around 40 selected students and 10 teachers participated in the workshop. Shri Dwijendra Kumar, Assistant Editor, NBT coordinated the workshop.

These travelogues will give our readers a glimpse of children's perception of India.

सात समुंदर

जात पात पूछे नहि कोई, हरि को भजे सो हरि का होई

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

तिरुवनंतपुरम में हबीबशाह की दरगाह में कुंजपातुम्मा और हासनकुट्टि पहुँचे हुए हैं। नारायणन और गायत्री भी। नारायणन गायत्री को लेकर उर्स मेले में मन्नत माँगने हेतु पहुँचे। हासनकुट्टि और कुंजपातुम्मा की आपसी बातचीत में आज के सांप्रदायिक हालात को लेकर बातें हो रही हैं। इधर, गायत्री ने अंतर्विद्यालय प्रतियोगिता में तैराकी में दो पदक जीते। बड़ों की बातचीत में 'दंगा' शब्द सुनकर गायत्री पूछ बैठती है—दद्दा, ये दंगा क्या होता है? आगे कुछ नई बात।

ट्रेन चल चुकी थी। चारों अपनी सीट पर आमने-सामने बैठे थे। दोनों तरफ के कच्चे घरों की खिड़कियों की रोशनी जुगनू की तरह पीछे भाग रही थी। केरल का नैसर्गिक सौंदर्य सचमुच अनुपम है। सही में यह शायद देवताओं का भी प्रिय स्थान रहा होगा। धरा का नंदन कानन।

वे बातें कर रहे थे।

केरल के जनजीवन में लोक कथाओं एवं गाथाओं का अपार भंडार है। परशुराम हों, वामनावतार हों, विष्णु या रामायण के बालि अथवा महाभारत के पांडव, सभी से जुड़ी इनकी अपनी कहानियाँ भी हैं। मलयालमभाषी यह मानते हैं कि इसी पंपा नदी के किनारे कहीं बालि और सुग्रीव का राज्य रहा होगा। इसी तरह आस्था, किंवदंती, पुराण, महाकाव्य सभी मिलकर नयी-नयी कथाओं का सृजन करते हैं।

गायत्री के प्रश्न करने पर नारायणन ऐसी ही एक कहानी सुना रहे थे। कुंजपातुम्मा आज

उनसे कहानी सुन रही थी। हासनकुट्टि को भी आनंद आ रहा था।

अपनी कुचुमोल के पूछने पर कि दंगा क्या होता है नारायणन सोचने लगे कि वह क्या जवाब दे। क्या जब हम धर्म और जाति के नाम पर जानवरों की तरह एक-दूसरे को मारते-काटते हैं वही दंगा है? लेकिन इससे भी बड़ा सवाल है, यह होता क्यों है? एक ही धर्म के लोग भी क्या एक-दूसरे की जान लेने में जरा भी सकुचाते हैं? इसको दंगा नहीं कहेंगे?

खैर, ट्रेन चल रही थी। चाय-कॉफी बेचने वाले आ-जा रहे थे। एकाध छोटे-मोटे स्टेशन पर गाड़ी रुकी होगी, साथ में उनकी कहानी चल रही थी।

महाराजा विक्रमादित्य की राजसभा में वररुचि नाम के मूर्धन्य विद्वान एवं समस्त शास्त्रों के ज्ञाता रहते थे। वे ब्राह्मण थे एवं इस बात के लिए भी उन्हें अहंकार था। विक्रमादित्य

यही कोई तीन सौ ईसवी के आसपास राजपाट चलाते रहे होंगे। वररुचि उनके परम प्रिय पार्षदों में से एक थे।

जैसा कि होता आया है अन्य कई सभासद उनसे जलने लगे, “अरे, हम वररुचि से किस माने में कम हैं?”

सो, उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया और महाराज विक्रमादित्य के पास जाकर बोले, “आप तो इन्हें इतना विद्वान समझते हैं। जरा पूछिए तो सही, रामायण महाकाव्य का सबसे महत्वपूर्ण श्लोक कौन-सा है?”

महाराज के पूछने पर वररुचि चिंता में पड़ गए। सर्वश्रेष्ठ श्लोक किसे कहें? संपूर्ण रामायण ही श्रेष्ठ महाकाव्य है। उन्हें उचित उत्तर ढूँढ़ने के लिए इकतालीस दिन का समय मिला। वे एक-से-एक धुरंधर पंडितों के पास गए। कई पुस्तकें खोलीं, उनके पन्ने उलटे-पलटे, परंतु कहीं उत्तर न मिला।

इसी ऊहापोह में सोचते-सोचते चालीसवें दिन वे जंगल में पहुँच गए। रात में एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठे सुस्ता रहे थे, तभी उसकी



डाल पर बैठे एक जोड़ा कालनेमि पक्षियों की बात उन्हें सुनाई दी।

एक ने पूछा, “अजी, जरा बोलो तो सही, रामायण का सर्वोत्तम श्लोक कौन-सा है?”

पति कालनेमि ने जवाब दिया, “तो सुन! जब राम, लक्ष्मण और सीता चौदह वर्षों के लिए वनवास जाने लगे तो लक्ष्मण अपनी माँ को प्रणाम करने पहुँचे। तब आशीर्वाद देते हुए रानी सुमित्रा ने उनसे कहा, “पुत्र, अपने ज्येष्ठ भ्राता राम की, पिता दशरथ के समान भक्ति करना। सीता को अपनी माँ समझना और जंगल को अपनी अयोध्या नगरी। ऐसे में वनवास भी तुम्हारे लिए शुभ होगा। यही है रामायण का सर्वोत्तम श्लोक।”

इस तरह वररुचि को तो उनके प्रश्न का उत्तर मिल गया, किंतु कालनेमि पक्षियों की एक

और बात उनके दिमाग में खटकती रही। क्योंकि रामायण के सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग के बारे में जानने के बाद मादा कालनेमि पक्षी ने कहा, “श्री रामजी की असीम कृपा है जो बेचारे वररुचि को उनके प्रश्न का उत्तर मिल गया।”

तब श्रीमान कालनेमि पक्षी बोले, “परंतु उसके भाग्य में एक अनहोनी भी लिखी हुई है। वह लाख प्रयास करे उससे बच नहीं सकता।”

“वो क्या है? इतने उच्च कुल के सद्व्राह्मण पंडित के साथ ऐसी क्या घटना घटने वाली है?” श्रीमती कालनेमि जानने को बेहद उत्सुक हो रही थीं।

“वही तो बात है। भले ही उसे अपने ब्राह्मणत्व पर इतना घमंड है, पर उसका विवाह होगा पास ही नीच कुल में आज ही के दिन जन्मी एक ‘परया’ जाति की लड़की के साथ।”

“क्या?” वह बेचारी चौंक गई।

उधर, वररुचि का चित्त दुखी हो गया। हे भगवान! भाग्य की इस चाल से कैसे छुटकारा मिले? तभी उसे इसका अवसर भी मिल गया। अगले दिन उसके जवाब से खुश होकर महाराज ने पूछा, “बोलो, क्या चाहते हो?”

उसने तो पहले से ही सोच रखा था। तपाक से माँग लिया, “महाराज, उस जंगल के पास जो ‘परया’ जाति के लोग हैं उसके घर यदि कल किसी लड़की का जन्म हुआ हो तो उसका वध करने का आदेश देने की कृपा करें।”

गायत्री मानो काँप उठी, “छिः! इतने विद्वान होकर उन्होंने ऐसा किया?”

कुंजपातुम्मा भी बोली, “या अल्लाह! क्या औरत जात को तूने पैरों तले कुचलने के लिए ही पैदा किया है?”

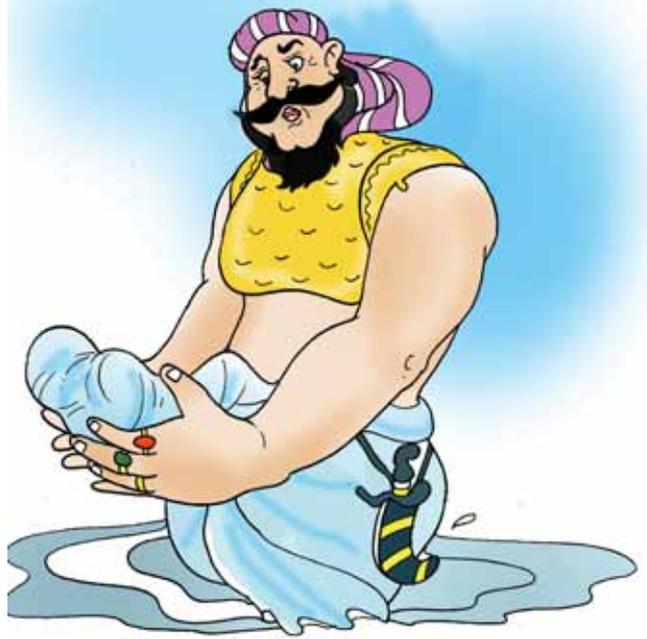
नारायणन ने हँसकर आगे कहा, “विद्या ददाति विनयम्। परंतु यहाँ तो बात उल्टी थी। विनय के बिना विद्या, म्यान बिना अहंकार की खुली तलवार है। यूँ समझो, एक मेधावी छात्र जो इतनी प्रतियोगिता एवं परीक्षाओं से होकर सर्जन बनता है, वह अगर चंद चाँदी के टुकड़ों के लिए मरीज को बचाने के बजाय उसके गुर्दों का गैर-कानूनी व्यापार करे तो क्या वह डॉक्टर कहलाने योग्य भी है? ऐसी विद्या किस काम की?”

वैसे, राजा ने भी पूछा था, “ऐसी चीज क्यों माँग रहे हैं आप?”

वररुचि ने उन्हें समझाया, “राज्य के कल्याण के लिए यह परम आवश्यक है। क्योंकि वही एक ‘परया’ जाति की लड़की राज्य में घोर अमंगल का कारण बनेगी।”

परंतु होनी को कौन टाल सकता है? उस बच्ची को तो उसके माँ-बाप की गोद से राजा के आदमियों ने छीन लिया, लेकिन घातक ने सोचा, ‘अरे, इस नन्ही-सी जान से राज्य में ऐसी क्या मुसीबत आएगी? इसे मारकर क्यों पाप का भागी बन्नू?’ सो, उसने उस बच्ची को एक कटे हुए केले के तने पर लिटाकर नदी में बहा दिया।

वर्ष बीतते गए। एक बार घूमते-घूमते वररुचि ने एक ब्राह्मण परिवार में एक रात ठहरने का निश्चय किया। उस ब्राह्मण ने जब उससे अपने घर भोजन ग्रहण करने के लिए कहा तो वररुचि ने एक शर्त रखी—उसकी कूट बातों को समझकर अगर कोई परोसे तभी वह भोजन कर सकता है। ब्राह्मण बेचारा क्या करे? परंतु उसकी लड़की ने उसके सवालियों का सही-सही जवाब दे दिया। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि के कायल होकर वररुचि ने ब्राह्मण से कहा, “मैं आपकी पुत्री से विवाह करना चाहता हूँ।”



शादी तो हो गई, पर बाद में बातों-ही-बातों में उसे पता चला कि यह तो ब्राह्मण की अपनी कन्या है ही नहीं। इसे उन लोगों ने उसी नदी में बहते हुए देखकर उठा लिया था। फिर पाल-पोसकर इतना बड़ा किया।

वररुचि ने सोचा, भाग्य का लिखा कौन टाल सकता है? थोड़े दिनों के पश्चात वे अपनी पत्नी को लेकर तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। नीलावती नदी के किनारे-किनारे वे चलते रहे। यहाँ से वहाँ, एक देश से दूसरे देश, वे चलते रहे। लग रहा था, उनकी यात्रा कभी न खत्म होगी। इसी यात्रा के दौरान उनकी कुल बारह संतानें हुईं। हर बार संतान के जन्म लेने पर वररुचि अपनी पत्नी से पूछते, “बच्चे का मुँह है कि नहीं?”

पत्नी कहती, “हाँ।”

तो वे पत्नी से कहते, “उसे इसी रास्ते के किनारे छोड़ दो। और आगे चले चलो।”

पहली बार पत्नी ने पूछा, “स्वामी, ऐसा आदेश क्यों कर रहे हैं?”

वररुचि का उत्तर था, “जब ईश्वर ने मुँह दिया है तो भोजन की व्यवस्था भी वही करेंगे।”

आखिर जब बारहवीं संतान हुई तो माँ से रहा नहीं गया। पति के कहने पर बार-बार संतानों की बलि देने से उसके दुख का कोई ठिकाना न था। इस बार वररुचि के पूछने पर उसने कहा, “नहीं प्रभु, इस बच्चे का तो मुँह ही नहीं है।”

“तो फिर इसे अपने साथ ले चलो।” कहते हुए वे आगे बढ़ गए।

माँ की आँखों में ममता के आँसू छलक आए। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और दूध पिलाने गई। परंतु यह क्या! उस बच्चे का तो सचमुच मुँह नहीं था। ऋषियों की कही हुई बात इसी तरह सच्ची साबित होती है।

परंतु उस पत्थरदिल पंडित को अपने इस अभागे बच्चे पर भी जरा भी तरस नहीं आया। आजकल के पलक्कड़ जिला में स्थित कदमपाजीपुरम के पास एक पहाड़ी पर उसने उस बच्चे को त्याग दिया और आगे बढ़ गया। आज उस पहाड़ी का नाम है 'वेल्लाक्कुन्निलप्पन', अर्थात् बिना मुँहवाले पहाड़ का देव।

गायत्री ने पूछा, "फिर? आगे क्या हुआ दूदा?"

कहानी अब खत्म होने चली थी...

"वररुचि का हर पुत्र प्रतिष्ठित विद्वान पंडित बना। चारों ओर उनकी प्रसिद्धि हुई। बड़े होने पर भाई ने भाई को पहचान भी लिया। बारह भाइयों ने निश्चय किया कि हम वर्ष में एक बार अवश्य एक स्थान पर मिलेंगे। अतः वररुचि की मृत्यु के पश्चात उनके वार्षिक श्राद्ध के दिन बारहों भाई सबसे बड़े भाई मेजाथल अग्निहोत्री के इल्लम यानी निवास पर मिलते थे।"

"अप्पुपन, दंगे से इस कहानी का क्या मतलब?" गायत्री को जल्दी थी क्योंकि अगले स्टेशन पर उन्हें उतरना जो था।

नारायणन हँस दिए, "तो सुन! कहा जाता है कि केरल में जितनी भी जातियाँ हैं सभी इन

बारह भाई के वंशज हैं। यानी सभी उन्हीं भाइयों के परपोते के परपोते के परपोतों की संतानें हैं। सभी भाई-भाई हैं, फिर भी एक-दूसरे को काट खाते हैं। कहते हैं कि अग्निहोत्री की संतानें ब्राह्मण कहलाए। उसी तरह, पक्कनार से 'परया' जाति बनी। पेरमधचान से बढ़ई। यहाँ तक कि उप्पुकोट्टन से मुस्लिम संप्रदाय बना।"

"अरे!" कुंजपातुम्मा को भी अचरज हुआ।

"वैसे तो यह सब कहानी है। क्योंकि भारतवर्ष में इस्लाम तो काफी बाद में आया। 570 ईसवी में तो पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब का जन्म ही हुआ था। भारत की पहली मस्जिद यहीं क्रांगानोर में बनी थी। वह भी काफी बाद में। फिर भी इस कहानी में जिंदगी की एक सच्चाई है।"

कुंजपातुम्मा अनायास बोल पड़ी, "हम सब आदम और हौवा की औलाद हैं।"

"बिलकुल, और दंगेबाज इसी सच्चाई को झुठलाना चाहते हैं।"

ट्रेन अपनी मंजिल पहुँच चुकी थी।

सी-26/36-40ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

सूचना : प्रिय पाठक, सात समुंदर का यह 21वाँ और अंतिम भाग है। यह धारावाहिक आपको कैसा लगा, हमें आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

-संपादक

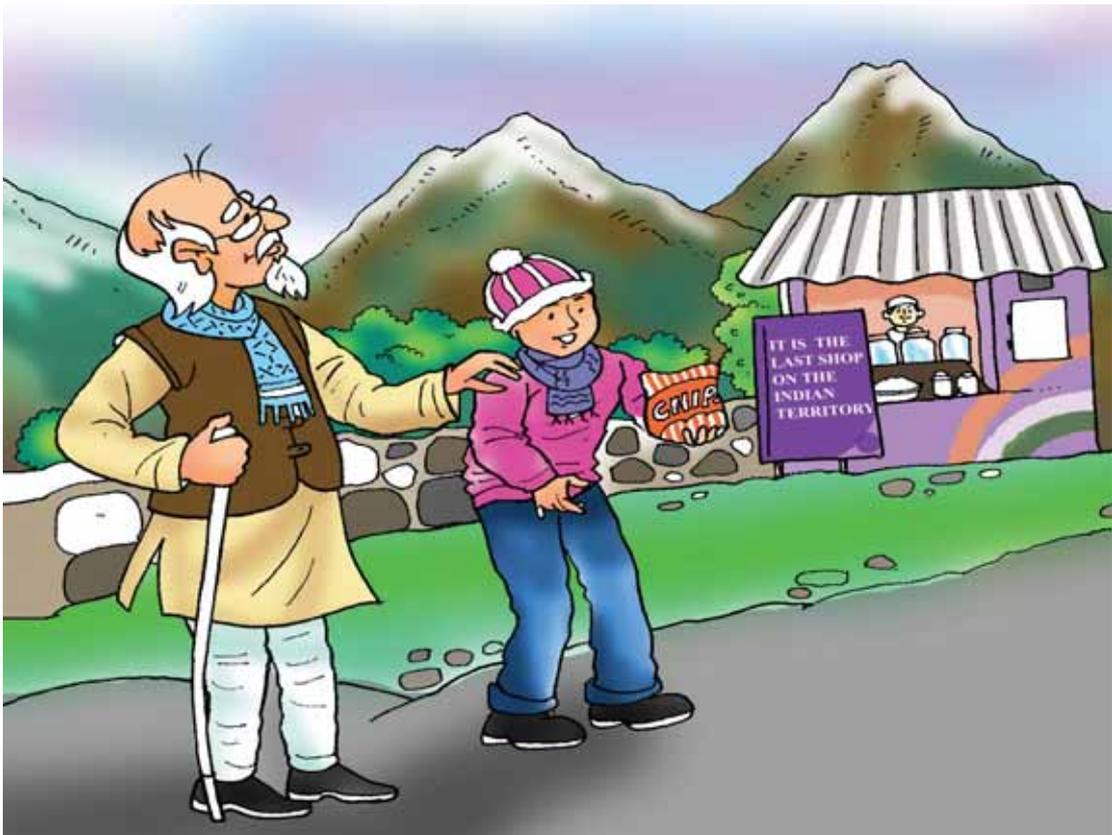
Uttarakhand : Abode of Temples

Aman Kumar Gupta

Hmm from where to start? Okay let us start from the Varanasi Junction where me and my grandfather were waiting for Doon Express to arrive. Suddenly a loud sound was heard. Yes, it was of Doon Express which was our first step towards journey to Haridwar situated at 920 km and the journey covers about 18 hours. Soon, we were on our respective seats and the train moved towards the goal. The train was moving on with a roar. After

eight hours at about 10.00 pm, we were at Lucknow Junction where we decided to have our dinner. Before going to sleep, I wished my grandfather "good night".

It was a very pleasant morning when I looked through the window. We saw a range of mountains. At about 8.00 am we were at the Haridwar station which has about six platforms. Outside there



was a huge statue of Lord Shiva. I took out camera and captured my first picture. My grandfather collected the details of the onward journey and decided to take rest at an Ashram with about 2 km from the Haridwar station. It was a big Ashram which has about 501 rooms. After getting afresh, we walked towards the 'Ghat of Haridwar' which was about 1.5 km from the Ashram and 3.5 km from the Haridwar station.

About 200 m before the Ghat, a sweet sound came to my ears. It was the sound of river which was flowing at high speed. We took bath in the river 'Ganga'.

Then my grandfather decided to go to Rishikesh and we took a *Vikram* for our next journey. It takes about 20 minutes. Rishikesh is about 25 km from Haridwar. My grandfather showed me the two hanging bridges at Rishikesh which have been named as Lakshman Jhula and Ram Jhula at Rishikesh. At the bottom of mountain, flows river Ganga—its flow being ideal for rafting.

Again we reached the Ashram and planned for our dinner at mess. My grandfather informed me that he had booked two tickets for Badrinath too, which is about 160 km from Haridwar. It takes about 16 hours because it is hilly area and one has to spend night on the way.

So, I was in the bus. Our bus stopped at Jalwa where we took a lodge whose

owner Kumar was quite a funny person. After spending the night at the lodge, we woke up in morning and then we put on our winter clothes. It was the month of June still the temperature was about 10-12°C.

At 9.00 am, we were at the Badrinath. Opposite Badrinath temple, there is a Kund which contains hot water. After the worship we went to a tea-stall. The owner told us that in the months of September till March, they leave the place because the whole area of Badrinath gets covered with the snow.

When my grandfather asked him who takes care of the temple during winter? He informed, "Indian Army" takes control. He told us that at a distance of 2 km in North, there lies Indo-China border.

There is a place named Bheem Pul. We reached there. Bheem Pul was a big rock pulled in between two mountains which was used as a bridge. We were informed that when Pandavas of Mahabharat were on the way to *Swarag*, Bheem built it. The cost of food at the 5875m above the sea level was very high. Then I saw a shop on which an interesting note was written—It's the last shop on the "Indian territory". I bought a packet of potato chips from the shop.

It was the last destination of our journey.

Varanasi : The City of Ghats

Gautami Singh

"A very warm good morning in this beautiful weather with a cup of hot coffee", said somebody. I opened my eyes coming out of world of fantasy, "Oh she was Maa! "What's good about this morning?" I asked Maa. "We are going to visit Varanasi and the reservation is of tomorrow," Maa replied. I jumped out of the bed in happiness and started to pack my luggage.

My enthusiasm and excitement were uncontrolled and I was eagerly waiting for the next day. I did not sleep whole night. Oops! I forgot to inform you that I live in Buxar (Bihar). The next day we reached station on time. But the train 'Punjab Mail' was late by three hours.

I began to roam here and there at the station and saw some distracting things like the beggars at the station had occupied a large part of the area which make passengers suffer.

The train arrived at 9.30 am. We searched and took our seats. The train started at 12.45 pm.

Meanwhile I decided to enjoy the scene outside. The train stopped at Chausa for few minutes and when it crossed river Chausa something clicked in my mind, and that was the battle of Chausa. My history teacher had told us

many things about that. The river was not too wide but had an appreciable length.

It was the month of August so the weather was neither too hot nor too cold. Then the train crossed Gahumar. I have read that it is the largest village in whole area. The view outside was really fantastic. There was greenery everywhere and the view of mustard field amazed me.



The height of all the mustard plants were similar and those seemed to change with the breeze beautifully. Now the train stopped at Mughalsarai. Then the train crossed river Ganga, the most sacred river as per Hindu mythology. The train slowed down at the bridge. It seemed that we were swinging in the lap of our mother, river Ganga. The train also seemed to pay gratitude to the river Ganga for letting it move over her without any objection.

Now our destination arrived. It was Kashi. It was about 12 pm. We stopped in a hotel nearby. After having meal, we went to Sarnath. It is the most beautiful place I have ever seen. There were so many temples. One thing which impressed me the most was that there were two religious structures existing side by side. These belonged to Buddhism and Jainism.

In one of temples, Lord Buddha was sitting in the midst of his five disciples and was preaching. I saw many pieces of clothes hung around that place and learnt that people write their wishes and hang them there and Lord Buddha fulfills them. The place was peaceful and beautiful. Then we went to a museum. There were many things which I had never seen before. The weather was quiet unusual, it seemed as it would rain but still it did not affect our enthusiasm.

Then we visited the Zoo and saw many crocodiles, deers etc.

The next day was Monday and it was the month of *Shrawan* according to Hindu mythology. We decided to visit the temple of Baba Vishwanath. We started in morning at 9 am and reached at 10.30 am this delay was due to crowd of *Kawarias*. We had *darshan* of Lord Shiva after of two hours. I poured milk over Shiva-linga. Then we left for Durgakund to worship Goddess Durga. The temple was also very attractive and beautiful.

Now we visited BHU Campus. There were greenery everywhere. Then we left for Ganga *aarti*. This was the best thing I saw in Varanasi. People gathered in a large number and were paying their gratitude to the river Ganga. We tasted Varanasi paan, peda and longlatta. They were too yummy. We went to Jalans and bought few Varanasi sarees. We returned late in the night due to heavy traffic. It took three hours to reach the hotel.

I would recommend to use private vehicles to enjoy the beauty of Varanasi and also to avoid traffic. This was the most enjoyable trip I ever had.

The next day we went to Cant station. Our train Upper India arrived at 9 am. This was the end of my most memorable journey.

असम : काजीरंगा, चाय-बागान और मैखला चादर

कामिनी शर्मा

मैं अपने परिवार के साथ असम ठंड के मौसम में गई थी। वाराणसी से असम की ओर जाने वाली 'तिनसुकिया मेल' मिली। उस ट्रेन से यात्रा करने के लिए हमें वाराणसी के स्टेशन पर सुबह के 4 बजे जाना पड़ा था। हमें पता था कि असम की यात्रा के लिए लगभग तीन दिन का समय लगता है, इसलिए हमने अपने घर से ही खाने-पीने और अपने मनोरंजन की वस्तुएँ ले ली थीं। जब हमने ट्रेन पकड़ी तो अपनी सीटों को ढूँढ़ने में कुछ वक्त लगा, क्योंकि ट्रेन में बहुत भीड़ थी और हमारी सीटों के पास ही कुछ लोग बैठे हुए थे। इसलिए हमें सीट नहीं मिल रही थी। फिर कुछ समय बाद हमें अपनी सीट मिल गई और हम सब अपने सामान के साथ सीटों पर बैठ गए थे।

मैं और मेरी दीदी रास्तेभर अपनी डायरी में अपनी-अपनी बातें लिख रहे थे क्योंकि हमें सबसे अच्छी बात लगती थी डायरी में अपनी यात्रा का वर्णन लिखना, और मैं और मेरी दीदी अपनी यात्रा का अनुभव अपनी दोस्तों को भी पढ़ाती थीं। वे भी बहुत-सी चीजें जान जाती थीं। उन्हें हमारी डायरी पढ़ना अच्छा लगता था। मैं और मेरी दीदी और दोस्त भिन्न-भिन्न स्थानों पर जब जाते थे तो अपने-अपने अनुभवों को डायरी के माध्यम से प्रकट करते थे। मैं अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी।

यात्रा के दौरान मेरी और दीदी की मुलाकात एक महिला से हुई जो समाजसेवी थीं। वह बहुत सादगीपूर्वक लोगों से बात कर रही थीं। उन्होंने मुझसे भी बात की। मुझसे मेरा नाम पूछा और मैंने भी उनका नाम पूछा। उनका नाम सितारा था। वह अपने स्वभाव से भी अच्छी लग रही थीं। मैंने उनसे पूछा कि आप कहाँ जा रही हैं तो उन्होंने बताया कि वह अपने बेटे की शादी में जा रही हैं। “वह कोलकाता में रहता है और मैं गलती से दूसरे ट्रेन में बैठ गई हूँ।” मैंने यह सब बातें अपने पापा को बता दी थीं और मेरे पापा ने उनकी मदद करने के लिए ट्रेन की चेन खींच दी जिसके कारण ट्रेन रुक गई और वह दूसरे स्टेशन पर उतर गईं। समय ढलने लगा और हम सब वाराणसी से बहुत दूर आ गए थे।

हमारी तीन दिन की यात्रा में एक दिन गुजर चुका था। अगले दिन दीदी और मैं एक स्टेशन पर उतरे और वहाँ पर पानी से अपने चेहरे साफ किए और कुछ देर तक हम साथ-साथ स्टेशन पर घूमते रहे। स्टेशन पर भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं का क्रय-विक्रय हो रहा था। हर कोई अपने-अपने काम में व्यस्त लग रहा था। मैंने उससे पहले कभी भी ऐसा दृश्य नहीं देखा था। और फिर, दीदी और मैं ट्रेन में बैठ गई और ट्रेन चलने लगी। उस वक्त देखा कि एक छोटा-सा बच्चा अपने दोनों हाथों में चना लिये जोर-जोर

से चिल्ला रहा था, “चना ले लो...चना ले लो...!”

और फिर वह मेरे खिड़कियों के पास आकर मुझसे बोला, “दीदी, चना ले लो।” उससे चना खरीदने ही वाली थी कि ट्रेन चलने लगी और मैं चना नहीं खरीद पाई। मुझे बहुत खराब लगा, पर मैं क्या करती! और इस तरह असम पहुँच गई।

तीन दिन की यात्रा के बाद असम पहुँची थी इसलिए मैं और मेरी दीदी बहुत थक चुके थे। दीदी माँ से तुरंत बोली कि “माँ, अब हम सब कहाँ जाएँगे?” इस पर मेरी माँ बोली, “होटल में।” मैं और दीदी खुश हो गए और हँसने लगे।

फिर कुछ देर में पापा टमटम ले आए। मुझे टमटम पर बैठने में डर लग रहा था इसलिए मैं अपने पापा के पास बैठी थी, और जब टमटम चला तो मैंने पापा को बहुत जोर से पकड़ लिया और बोली, “पापा, हम ऑटो से चलें?” पापा हँसकर बोले, “यहाँ पर ऑटो बहुत कम चलता है और ठंड के समय तो बहुत ही कम।” मैं फिर यह सब सुनकर बैठ गई और टमटम चल पड़ा। हम सब होटल के पास पहुँच चुके थे।

होटल में बैठकर हम सबने वहाँ का मनपसंद भोजन किया। मछली और चावल मेरी दीदी को बहुत अच्छा लगा। हम सब अपने-अपने सामान



रखकर सोने चले गए। फिर जब हम सुबह उठे तो सफर की बातें करने लगे। सुबह 11 बजे घूमने के लिए हम सब तैयार हो चुके थे और कुछ देर में हम अपने नाना के घर पहुँचने वाले थे।

नाना के घर जाने में तकरीबन पाँच घंटे लग सकते थे क्योंकि होटल से नाना जी का घर बहुत दूरी पर था। जब रास्ते से गुजर रहे थे तो हमें चाय के बागान, लकड़ियों की छोटी तथा बड़ी दूकानें दिखीं। और भी कुछ लोग दिखे जो कुछ अलग-से वस्त्र पहने हुए थे और जब मैंने अपनी माँ से पूछा कि 'ये सब महिलाएँ क्या पहनी हुई हैं,' तो माँ ने कहा, 'मैखला चादर है। यह किसी खास दिन पहना जाता है और कुछ लोग हमेशा पहनते हैं।'

मुझे मैखला चादर बहुत अच्छा लगने लगा था। कुछ ही देर में नाना जी का घर आ गया। फिर, मैं और दीदी नाना, नानी और मामा से मिलकर बहुत खुश हुए, और खुश भी लग रहे थे। हम सब दो दिन तक घर में रहे और फिर नाना से घूमने की बात कही। नाना जी ने कहा 'मैं नहीं जाऊँगा, मामा के साथ चले जाओ।' मैं बोली, 'हाँ, मैं आपके साथ घूमने जा रही हूँ।' वह बोले, 'ठीक है।'

फिर मामा के साथ कुछ ही देर में ब्रह्मपुत्र नदी घूमने गए और उसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। नद की लंबाई-चौड़ाई काफी अधिक थी और उसके किनारे-किनारे नाव और विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ दिख रही थीं। दीदी, मामा और

मैंने नाव की सवारी की। हमें बहुत अच्छा लगा, क्योंकि वह नद बहुत शांत था और बहुत सुंदर भी। और फिर हम काजीरंगा जंगल गए जहाँ एक सिंह वाले गैंडे थे। वे बहुत कम संख्या में थे। पास ही एक चिड़ियाघर था। इतने में शाम हो गई और हम घर जाने लगे। फिर, हमने अगले दिन चाय के बागान देखे जो हरा-भरा था। वहाँ पर महिलाएँ और छोटे उम्र की लड़कियाँ चाय के पत्ते तोड़ रही थीं, और वे भी मैखला चादर पहनी हुई थीं। चाय की खेती सीढ़ीदार होती है और जब हम नीचे से ऊपर की ओर बागान जा रहे थे तो वह बहुत अच्छा लग रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो चाय के बागान आसमान छू रहे हैं।

रास्ते में लकड़ियों की छोटी-छोटी दूकानें भी थीं जो अद्भुत थीं तथा वहाँ पर लकड़ियों के हर सामान मिल रहे थे।

इस तरह मैं असम घूमी। फिर जब नानी के साथ सब्जी लेने गई तो नानी ने बताया कि सब्जी बाजार से आगे एक शिवजी का मंदिर है। मुझे नानी उस मंदिर पर ले गई। मंदिर देखकर मैं बहुत खुश हुई क्योंकि मंदिर एक पेड़ के नीचे था और वह सिर्फ घंटियों से बना हुआ था और देखने में बहुत मनभावन था। जब वापस वाराणसी आने लगी तो मुझे मेरी नानी ने नीले रंग का मैखला चादर दिया जो मुझे अच्छा लगा। घर आने पर मैंने अपनी डायरी और मैखला चादर दोस्तों को दिखाई जो उन्हें बहुत अच्छी लगी।

Chennai : Endowed with Nature's Beauty

Ashish Kumar Gupta

My family hardly goes out for an excursion. But when I was in Sixth standard, my parents along with me went to Chennai. At that time we lived quite far from Chennai at Chittaranjan in West Bengal.

I was very excited to go there because I had never gone too far from my home. Our journey started in the morning at three o' clock. It was summer season so the air outside was very cool and it filled us with joy and excitement. We went to the railway station at Chittaranjan. The plan was to go to Kolkata first and after that we had to travel to Chennai.

So as planned we went to Kolkata by train. It took five hours to reach there and on reaching there my father went to the inquiry counter to know about our next train. Fortunately it was late by two hours. We decided to have a look at Kolkata. As soon as we came out of station, the magnificent and marvelous, Howrah Bridge was before our eyes. I was very thrilled to see that. I forced my parents to come along and when I reached in the middle of it, the bridge was shaking very badly. It seemed as if an earthquake was shaking the bridge.

After spending little time on it we took a bus and went to science emporium. It was very large and magnificent. When we went inside it there were a large number of gadgets with some basic science concepts. There was invisible glass, motion sensors, variety of cameras and lot of toys to play with. We spent two hours there and then we went to the railway station to board our train.

When we reached the station, the train was already there so we quickly took our birth. We bought some guavas to eat at the railway station. The train departed from the station after fifteen minutes. It would take three days to reach there. It was a very long journey.

Luckily we met another family going to Chennai in the same coach so we had a company. The three days passed very quickly. When we were in the region of Southern railways, one thing I noticed that cleanliness was well maintained everywhere. The stations were very clean. The eastern and northern regions are not so clean. We crossed thousands of fields, lakes and trees to reach Chennai.

We were at Chennai around 4.00 am. The station was magnificent. There were plants all around in pots. Some artificial coconut trees were also enhancing the beauty of the place. The air was cool.

We were very tired and so we all wanted to have a sleep. My father booked an auto rickshaw and we headed for a Guest House. We stopped before a four storeyed Guest House. We took a room on rent and went into it using an elevator. Our room was situated on the third floor. We had a television in our room and two wide windows were also there to have a proper ventilation. We slept there for about eight hours and woke up about 2.00 pm. We all were feeling hungry, so my father went outside and bought three big dosas for us. He also had a packet of salt. I did not know why did he buy it. Later I came to know that some people don't use salt in their food.

We had our dosas and in the evening we went to the Marina beach. Our Guest House was quite near to it. We walked the wet seashore for miles. There were some stalls in which fried sea water fish were being sold. When the sky became dark we went into the sea water. The



water was very cool. I however swallowed the sea water it tasted very salty and dirty. We were at the beach till 9.00 pm. After that we headed towards our Guest House with some idlis, rumali rotis, sambhar and dosa. We had bath and after that we had our dinner.

Next day we had to go to the Apollo Hospital for the check-up of my mom. The hospital was like a *Bhool Bhulaiya*. I got lost but later on I found my parents.

One day a change came to our routine. We booked a travel bus to have a look of city and do a little sight seeing. We went to various places like the zoo, snake park, BGP golden beach etc. There were lots of *jhulas* there and that too free of cost. In fact this was the last day of my trip to Chennai. Next day we headed towards Chittaranjan.

Jammu and Kashmir

Pratik Kumar Jha

It was a fresh summer morning of early May. I went to the playground. My friend Abhi asked me, "where were you for last 10 days?"

I was in Jammu and Kashmir during the period.

This conversation is of 5 May 2014. The journey I am telling about is my journey to Jammu and Kashmir. The best journey of my life till now. I know that you all are also excited to know about my journey as I am so excited to tell you.

If you live in or around Varanasi and like to leave early morning then the best train is Shri Shakti Express which arrives Varanasi Junction at 5.10 am. This train goes up to Katra Junction. I got a window seat and as everyone does I began to look outside through window.

It was a fantastic view I was sinking deep and deep in my thoughts but suddenly I was brought back to my senses by a sound. The voice was of a man selling breakfast items. After a light breakfast, I again went to the window seat, but this time I was not interested and fell asleep. Thus, I reached Katra. We went to my uncle's house in a jeep. The journey started the next day with a

visit to Mata Vaishno Devi Shrine which was near to my uncle's house. After the worship, we came back.

Our next destination was Srinagar. We reached there the next day. It was not bitter cold there, so a half sweater was enough. There we visited the places that were worth not less than paradise. We visited all the three Mughal gardens. I was excited to see the pattern of the flowers and grasses. I think that there would be a team of gardeners who manage these all. Of all, I liked the most was Nishat Garden. We also did shopping there. We bought carpets and dry fruits from Raghunath Baazar.

The next thing I saw was really astonishing. The house boats on Dal Lake. We planned to spend one night there. There was a whole world floating on a boat. The hospitality on the boat was also good. We were also offered 'Kahwa' after the delicious food.

The next day we left for Gulmarg, flowers were everywhere. One who wants adventure in life can trek in Godola. If you are a nature's lover then you can see the cup-shaped meadows. Then, we went to Sonmarg. There was a gold meadow of flowers which would

fascinate everyone.

That night we watched Rouf Dance. It was different from other Indian dances but music was same as north India. The next day, as we were leaving for Ladakh when we found a few children asking for a lift. You will be surprised to know that they were going to school which was situated 12 km away from their houses.



Till now I was telling about nature's beauty which fascinated me but what left an unforgettable impression on me was not nature's beauty but it's harshness. The place I am talking about is Siachen Glacier. It is the highest warfare area in the world.

I however regret the most for not being able to visit Leh and Ladakh. But we went to Siachen Glacier through Skardu that falls in Ladakh. Siachen is quite different from other places in Jammu and Kashmir. The journey to Siachen was really adventurous. Roads were narrow, temperature very cool. We were in heavy woolen clothes. On the

way, we saw 'Rino Glacier,' a group of three glaciers. The whole area was covered with snow. The temperature was below 0°C even in late April.

When I reached Siachen, it was snow all around. I began to jump around. My uncle told me that it is fresh snow. Suddenly, I saw a battalion of soldiers moving around. I was shocked to find soldiers because they have to remain there all the time, even in bitter and killing winters of December and January.

I asked a soldier if he also attends to duties during winter nights. The answer was, "We perform night duties to make your days and nights pleasant."

दिल्ली : इंडिया गेट, मंदिर और गुरुद्वारा

दीपशिखा

मैं घूमने की बहुत शौकीन हूँ इसलिए हमारे परिवार ने इस गरमी की छुट्टी में भी घूमने का निर्णय लिया। मैं इससे पहले भी कई जगह घूमने गई, पर वह यात्रा मुझे खास नहीं लगी थी। लेकिन वाराणसी से दिल्ली की यात्रा हमारी यादगार रही। हम सबने मई के महीने में घूमने जाने का टिकट बुक करवा लिया क्योंकि गरमी की छुट्टियों के दौरान भीड़ बहुत होती है। इसलिए एक महीने पहले ही हमारा टिकट कट चुका था। 30 जून, 2012 को हमारी ट्रेन थी। उस दिन बहुत गरमी थी और लोग गरमी से बहुत परेशान थे, पर जाने की अलग खुशी थी। हम सब तैयारी करके लगभग 4.30 बजे घर से स्टेशन के लिए निकल पड़े। ऑटो पकड़कर हम मंडुवाडीह स्टेशन पहुँचे और कुछ देर इंतजार किया। थोड़ी देर बाद हमारी ट्रेन स्टेशन पर आकर लगी। हमारी ट्रेन का नाम 'शिवगंगा एक्सप्रेस' था जो बहुत तेज चलती थी। हम अंदर कोच में गए और अपना-अपना स्थान ले लिया।

मैं और मेरे भाई-बहन सब खिड़की के पास बैठने के लिए झगड़ा करने लगे। फिर पापा के कहने पर एक साथ खिड़की के पास बैठकर बाहर का आनंद लेने लगे। ट्रेन चल पड़ी और थोड़ी देर में स्टेशन आने लगा। लगभग 5 या 10 मिनट का समय कुछ स्टेशनों में और कुछ में

20-30 मिनट लगा। मेरी इस यात्रा का सबसे पहला स्टेशन ज्ञानपुर आया। यहाँ ट्रेन 2-3 मिनट के लिए रुकी और फिर आया राजातालाब।

यहाँ भी कुछ क्षण रुककर ट्रेन चलने लगी। मैं वहाँ ज्यादातर लोगों को सामान ले जाते हुए देख रही थी। मैंने अपने बड़े भाई से पूछा कि हर आदमी के पास किसी-न-किसी चीज का बैग है, ऐसा क्यों? मेरे बड़े भाई ने बताया कि यहाँ से सब लोग सामान कम दाम में खरीदकर ले जाते हैं और बाद में बड़े शहर या अपने स्थान पर जाकर इसकी दोगुनी कीमत लेते हैं। इसके बाद ट्रेन का अगला ठहराव इलाहाबाद का था। यहाँ ट्रेन 30 मिनट के लिए रुकी। तब मैं पहली बार किसी स्टेशन पर उतरी। मेरे छोटे भाई-बहन, मम्मी-पापा सब हमें ट्रेन से ही देख रहे थे। पहली बार मैं ट्रेन से उतरी थी क्योंकि हर बार मुझे सब छोटा कहकर ट्रेन से नहीं उतरने देते थे या कहते थे कि ट्रेन चल पड़ेगी और तुम यहीं रह जाओगी। थोड़ी ही देर बाद यह सुनाई पड़ा कि ट्रेन अब चलने वाली है। हम सीधे जाकर ट्रेन में अपने-अपने स्थान पर बैठ गए।

उस समय तक अँधेरा भी हो चुका था इसलिए हमलोग रात का भोजन करके सो गए। जब सवेरा हुआ तो मैं बाहर का नजारा देखती रह गई और जब मैंने पूछा कि कौन-सा स्टेशन आने वाला है तब कुछ लोगों ने बताया कि कानपुर तो

कब का जा चुका है। अब बस दिल्ली आने ही वाली है। लेकिन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से पहले छोटे-छोटे अनेक स्टेशन आस-पास में हैं। मुझे खिड़की से दिल्ली का प्रसिद्ध प्रगति मैदान दिखाई दिया।

यह प्रगति मैदान मुझे बहुत अच्छा लगा। चारों तरफ हरियाली थी और नया-सा दिख रहा था। हम सब खिड़की से बाहर देख रहे थे। बाहर का वातावरण बहुत अच्छा दिख रहा था। मुझे बहुत खुशी हो रही थी क्योंकि मैंने ऐसा नजारा पहले कभी नहीं देखा।

अब हमारी ट्रेन प्रगति मैदान पार करते हुए तिलक ब्रिज पहुँची और वहाँ भी 10 मिनट के लिए रुकी। हम फिर बाहर निकल गए। मैं आश्चर्यचकित हो गई इतना अच्छा स्टेशन देखकर। वहाँ प्लेटफार्म पर कोई कूड़ा नहीं नजर आ रहा था और एकदम साफ दिख रहा था। तिलक ब्रिज को पार करते समय भी धीमा शोर सुनाई पड़ता था। ऐसा लग रहा है कि जैसे ट्रेन भी डरते हुए कदमों से चल रही हो। फिर जब वहाँ से ट्रेन चली तो ऐसा लग रहा था जैसे कि आस-पास के पेड़, खंभे आदि सब चीजें भी साथ में दौड़ लगा रही हों, और साथ में सूर्य भगवान भी।

यात्रा लंबी थी। शिवगंगा एक्सप्रेस जो सुपर



फास्ट एक्सप्रेस है वह भी हमें धोखा देने लगी। जब हम गाजियाबाद पहुँचे थे तब हमें वहाँ दो घंटे रुकना पड़ा क्योंकि ट्रेन लेट हो गई थी। हम उस समय भी ट्रेन से निकलकर बाहर प्लेटफार्म पर खड़े हो गए थे। तब मेरा बड़ा भाई खीरा खरीदकर ले आया और खिड़की के पास से अंदर भाई-बहन और मम्मी-पापा को भी दिया और हमलोग बाहर खड़े होकर खाते रहे। खीरा से कुछ राहत मिली। तभी दूसरे कोच से निकलकर एक विदेशी पर्यटक भी बाहर आई जिसकी वेशभूषा अलग थी। वह खीरा वाले दुकानदार के पास गई और मेरे ख्याल से उसने खीरे का दाम पूछा था। पर दुकानदार नहीं समझ पाया। तब एक आदमी

ने चिल्लाते हुए पूछा—कहाँ जाओगी, पहले हिंदी सीख लेना तब आना। मुझे थोड़ा बुरा लगा यह बात सुनकर। फिर वहाँ से ट्रेन चली और हम दिल्ली पहुँच गए।

दिल्ली पहुँचकर हम एक होटल में रुके और उस दिन आराम किया। दूसरे दिन हम घूमने के लिए सबसे पहले बंगला साहिब गए। वहाँ सबको सिर पर बाँधने के लिए एक दुपट्टा और रूमाल दिया गया। फिर हमने गुरुद्वारा में प्रवेश किया, वहाँ का प्रसाद खाए जो शुद्ध देसी घी में बनाया गया हलवा था। मुझे वह बहुत पसंद आया। उसी गुरुद्वारा में एक बड़ा तालाब था जिसमें सुंदर-सुंदर मछलियाँ तैर रही थीं। और वहाँ के सेवादार पानी से पूरा फर्श धो रहे थे। तालाब के बीच एक पोस्टर लगा था कि आप सेवा करना चाहते हैं तो कर सकते हैं। फिर पापा सहित हम लोग झाड़ू लगाने लगे।

उसके बाद हम लोटस टेंपल गए। जब हम अंदर प्रवेश करने वाले थे तो हमें समझाया गया कि अंदर शांति बनाए रखना है और मोबाइल ऑफ करना है। जब हम सब अंदर गए तो बड़ी शांति महसूस हुई। कुछ देर बाद हम वहाँ से निकले और नीचे तालाब के पास आकर बैठ गए। वह जगह बहुत ठंडी थी। वहाँ गरमी का पता ही नहीं चल रहा था। वहाँ से जाने का मन नहीं कर रहा था, पर जाना तो था ही। हम वहाँ से बाहर आए और गोलगप्पे-चाट इत्यादि खाए और अपने होटल वापस चल दिए। हमने खाना खाने से मना कर दिया। किंतु मम्मी-पापा ने

थोड़ा-सा खाना ऑर्डर किया, और खाया। बाद में बात करते हुए हम सब सो गए।

दूसरे दिन हमें वहाँ से कालका जी मंदिर जाना था। हम सब सुबह उठकर तैयार हो गए और कालका जी मंदिर के लिए निकल लिये। वहाँ पर इतनी लंबी लाइन लगी थी कि हमें लगा मानो हम वाराणसी के विश्वनाथ मंदिर आ गए हों। वहाँ हमें लंबे इंतजार के बाद कालका जी के दर्शन हुए। वहाँ हमें प्रसाद में लड्डू मिले। उसी दिन और जगह घूमते-घूमते हम शाम में इंडिया गेट पहुँचे। मुझे वहाँ ज्यादा मजा तो नहीं आया, पर हम सबने वहाँ बहुत सारे फोटो खिंचवाए। वहाँ के गोलगप्पे खाए जो मुझे बहुत भाए। और भी चीजें खाईं। उसके बाद हमने होटल मेट्रो से जाने का निर्णय लिया, जिससे हम मेट्रो भी घूम सकें। वाकई, मेट्रो का सफर बहुत मजेदार था। सफर केवल 15 मिनट में ही पूरा हो गया, और हम अपने होटल पहुँच गए।

अगले दिन हमारी वापसी की यात्रा शुरू हो गई थी। हमारी वापसी की ट्रेन 12.30 की थी। ट्रेन एक घंटा लेट थी और इतनी ज्यादा गरमी थी कि जीना मुश्किल हो गया। ट्रेन आते ही हमलोगों ने फटाफट अपनी-अपनी सीट ली। अब ट्रेन दिल्ली छोड़ने लगी थी। दिल्ली से निकलते वक्त दिल्ली की सुनहरी यादें अपनी पलकों में बंद कर मैं सो गई। जब उठी तो मुगलसराय स्टेशन आ गया था। स्टेशन पर ऑटो पकड़कर हम अपने घर पहुँच गए।

Mystical Shirdi

Dharmesh Kumar

It was summer vacation. We planned to visit a religious and historical place. I was filled with joy. I was going out of Varanasi after a long time. I would see the great city of Shirdi famous for Shirdi Sai Baba temple. It is a big and beautiful temple. The city is in Maharashtra. The

distance is about 1856 km from Varanasi.

We booked tickets of the Mahanagari Express one month in advance into second class compartment. We started our journey in the morning. The date was 21 May 2014. We reached



the station, there was a big crowd over there. People were waiting for the train. Some coolies were having the luggage of the passengers on their heads.

After a few minutes the train came. It was 11.00 am. People rushed towards the train. When we entered the train, we looked inside the compartment. We soon found our seats which were reserved. There were not many passengers in my compartment. Some of them were reading the morning edition of newspaper. Some were engaged in talks. Some like me were enjoying the sight outside.

The train touched Mirzapur junction after some time. A tea vender went past us. We enjoyed tea. At 12.30 pm the train started. Soon it picked up the speed and began to run very fast. It sped through smaller stations. On either sides were green fields. From time to time a hillock or a rivulet could be seen.

The train steamed off again. A ticket checker came and checked our tickets. There was one man without ticket. He paid the extra charges and the ticket checker made out a ticket for him.

From time to time hawkers would get into and sell articles. Sometimes a beggar too would get in. He would start singing and ask for money. Occasionally a train from the opposite direction

would suddenly shoot past us. Everyone would get startled.

We reached at Jhaja junction at 7.25 pm. My father bought meal for me. I was hungry. So I enjoyed the meal. The charge was reasonable.

The train sped fast. I fell asleep. The name of Durgapur however entered my ears. I looked out. There stood the giant Durgapur Steel Plant. The train rolled on. After half an hour around 2.50 pm the train was being drawn by an electric engine. It now picked up more speed.

We reached Manmad at 9.00 pm. The station was very beautiful and clean. The dustbins were placed everywhere at the railway station of Manmad. From railway station I asked a person the distance between Manmad and Shirdi. He told me that Shirdi was 10 km away. We went to Shirdi by bus. After half an hour, we reached Shirdi. The city looked very beautiful and clean. After having breakfast, we went to Dharmashala where we took rest. We decided to visit the temple in the morning at five.

Shirdi Temple looks very beautiful and I got excited. We passed night there. In the morning, we went to Shani Shingnapur which is famous for the temple of God Shani. Then after two days we came back to Varanasi.

My First Train Journey

Himalaya Kumar

Whenever we have to travel long distances within the country, we travel by train or aeroplane. I still remember my first train journey which I understood when I was just about 8 years old.

I experienced the journey when my parents took us all to Bodhgaya during summer vacation. We arrived at the railway station of Varanasi around 7.00 am to catch the train to Bodhgaya. Crowd had started gathering at the ticketing counter to buy tickets and there were long queues. There we waited for the train and saw many people rushing to the platform. Children were running happily because they were going to spend their holidays. We quickly bought some magazines, mints and chocolates.

The train finally arrived and we scrambled into our coach to get to our seats. I was lucky to get a seat near the window. At last the guard blew the whistle and the train moved slowly and pulled out of the station. This was a new experience for me.

There were friendly passengers all around and soon we started talking with each other. The scenery outside was interesting and varied. As we passed through villages, I noticed fields of rice, wheat, mustard and vegetables. Trees,

bushes, rice fields and huts flashed past us and we were greeted by village children waving and smiling at us happily.

After about three hours I felt sleepy in spite of rattling sound of the wheels.

Suddenly there was a jerk and the train came to a halt. The engine hissed and brakes squeaked. I woke up with a start and looked out of the window. We had reached a station. Three minutes later, the train started moving again and accelerated gradually with same speed.

Finally, the train jerked to a complete stop. We had at last reached our final destination. This is the end of my first journey of train. But an important thing that I noticed after that journey so long back, I have made several journey by train but that first journey still lingers in my mind and thoughts.



हिमाचल प्रदेश का सुंदर पर्वतीय क्षेत्र — कुल्लू-मनाली

मोहम्मद सिराजुद्दीन अंसारी

सुबह का समय था। घड़ी का अलार्म 'बीप-बीप' कर रहा था। मम्मी चिल्लाते हुए कह रही थी, "जल्दी उठो, स्कूल नहीं जाना क्या?" मैं बिस्तर पर ही था। मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि हिमाचल प्रदेश के बर्फीले सुंदर पहाड़ों में अलग-अलग क्षेत्रों से लोग अपनी छुट्टियाँ बिताने आ रहे हैं।

नवंबर का महीना था। हल्की ठंडी हवाएँ चल रही थीं। मैंने पापा से कहा, "अगर मैं कभी घूमने जाऊँगा तो वह मनाली ही होगा।" ठंड की छुट्टियाँ शुरू ही होने वाली थीं। हम सब वहाँ जाने की तैयारी में लग गए। नवंबर-दिसंबर के माह में यात्रा करने हिमाचल प्रदेश जाना हो तो इस समय वहाँ होटल मिलना मुश्किल होता है।

हमारी यात्रा का शुभ आरंभ यहीं से हुआ। हमने वाराणसी से कुल्लू-मनाली की यात्रा लगभग दो दिन में शताब्दी एक्सप्रेस से की। यह सुबह में जाने के लिए सबसे अच्छी ट्रेन है। हमने अपनी जरूरतों

का सामान अपने साथ ले लिया। जैसे ही हम वाराणसी रेलवे स्टेशन पहुँचे, हमने वहाँ देखा कि टिकट काउंटर पर भीड़ लगी है। लोग एक-दूसरे के ऊपर धक्के मारते हुए गिर रहे हैं। हम सभी ए.सी. की फर्स्ट क्लास वाले डिब्बे में बैठ गए।

हम सब खूब मस्ती-मजाक करते हुए वहाँ के प्रकृति और सौंदर्य के बारे में सोचते हुए पहुँच गए। तभी वहाँ के कुछ टैक्सी चालक हमारे पीछे पड़ गए। उनमें से एक ने तो हमारी टाँगें तक पकड़ने की कोशिश की और कहा—“कहाँ जाना है साहब? सामान कहाँ है साहब?” हमने उसे



है साहब? सामान कहाँ है साहब?” हमने उसे सर्किट हाउस रोड के पास, जो 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित था, वहाँ चलने को कहा। हमारा होटल वहीं पर स्थित था।

ऊँचे शिखरों को देखकर ऐसा लगता था जैसे पूरी दुनिया की यह सबसे खूबसूरत जगह हो। वहाँ पहाड़ों वाले रास्तों पर ठंडी हवाएँ चल रही थीं और छोटे-छोटे मनुष्य ऊँचाई से देखने पर चींटी जैसे लग रहे थे।

मुझे किताब में लिखी एक बात याद आई—“यादें मिठाई के डिब्बे जैसी होती हैं। एक बार खुल जाए तो एक नहीं कई खाने का मन करता है।”

हम सब होटल पहुँच गए। पाँच दिन की बुकिंग थी। जिस होटल में हम ठहरे थे, उसके सबसे नजदीक करीब 30-40 किलोमीटर की दूरी पर मंदिर स्थित है। हम सभी दूसरे दिन वहाँ गए। स्थानीय लोगों का कहना है—यह महाभारत में हिडिंबा देवी के भाई हिडिंबा जी का मंदिर है। ऊँची लकड़ियों पर टिका हुआ है। इस मंदिर के आस-पास केदार के जंगल हैं एवं यहाँ का मुख्य मेला डुंगरी मेला है। यहाँ जाने का सबसे अच्छा समय नवंबर के आस-पास का होता है। यहाँ कोई टिकट भी नहीं लगता।

वहाँ जाकर मुझे यह अहसास हो गया था कि भगवान पर भरोसा तो करना ही चाहिए। शाम होने से पहले हम सब निकल पड़े। रास्ते में आते ही कई सारी समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। सूरज का पता ही नहीं था। ठंडी

हवाएँ कान काटते हुए निकल रही थीं। पहाड़ी रास्तों पर डर भी लग रहा था। फिर हम सब अपने होटल पहुँच गए।

वहाँ की एक खास बात यह है कि लोगों में दूसरों के प्रति आत्मीयता, सम्मान और आदर की भावना है। लोगों का प्रकृति के सौंदर्य को निखारने में पूरा सहयोग है। छोटे-छोटे बच्चे स्कूलों के लिए अनोखी वेशभूषा में जा रहे थे। बच्चों के चेहरे पर उस दुनिया की सुंदरता और उनके मेहनत का प्रतिबिंब झलक रहा था। स्थानीय लोगों से पता चला कि जब बच्चे स्कूल चले जाते हैं तब उनकी माताएँ पहाड़ों पर काम करने चली जाती हैं। शाम को काम खत्म करके बच्चों को लेने स्कूल चली जाती हैं। वहाँ के लोगों में प्रकृति और शिक्षा के प्रति काफी लगाव है। हम सभी को यह सब रोमांचक लग रहा था।

वहाँ से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर मंडी में, पहाड़ियों के बीच, शिखर पर भैरव का मंदिर स्थित है। मैं वहाँ तो नहीं गया हूँ, लेकिन लोग बताते हैं कि करीब 20 हजार साल पहले वहाँ ब्रह्मा और शिव के बीच बहस हुई थी। शिव ने ब्रह्मा से पूछा, “इस अद्भुत संसार को बनाने वाला कौन है?” ब्रह्मा ने कहा, “मैं हूँ।” शिव क्रोधित हुए और उन्होंने ब्रह्मा का सिर धड़ से अलग कर दिया।

वहाँ और भी कई जगह ऐसे हैं जो लोगों को प्रभावित करते हैं। सोलांग वेले भी उनमें से एक है।

Sarnath : Land of Culture and History

Nitish Kumar

In my text books I had read a lesson in Hindi about the historical monuments situated in Sarnath. So I decided to go to Sarnath with my four friends Shivam, Mohan, Nishant and M Mandal. We went to Bhulanpur Railway station, took tickets and waited for the train.

Shivam had brought a smartphone with him, we decided to have prior information about 'Shiv-Ganga Express' Unfortunately, the train was late by two hours. As the train was about to come on the platform so we got ready. After some time, the train reached Manduadih railway station. There was great hustle-bustle all around. So we thought that perhaps a large crowd was about to come. This really happened.

Now, train reached the Varanasi railway station. Shivam and Nishant left the train for some time to fill the water bottle; then the train started. We decide to take some food. I opened our bag and took food. Train reached its

destination and we left the train. We went to "Gyani Jyn Temple". It has a beautiful statue of God Buddha. We took some pictures.

After that we went to the Museum and saw many historical stet which were related to the time of Buddha and also saw many statutes of God Buddha. All were amazing but most attractive was the 'Ashok Chakra' with ring-like structure. After sometime there we went to the Zoo. There were many animals and birds which are only seen on the pages of books but now we could see different types of animals and birds through our eyes. We took some pictures of them.



लखनियादरी : पहाड़ पर मजा

तनुजा शर्मा

यूँ तो हर साल गरमी के मौसम में हम पिकनिक जाते थे, पर इस बार मामला कुछ अलग था। इस बार मैं और मेरे भइया और सारे बच्चे स्कूल की ओर से जा रहे थे, और वह भी ठंड के मौसम में। हमारे स्कूल के अध्यापक और अध्यापिकाओं ने मिलकर फैसला किया कि इस बार ठंड के मौसम में बच्चों को बाहर ले जाया जाए। फिर हमारे कक्षा-अध्यापक द्वारा बताया गया कि हम सभी लोग 'लखनियादरी' जाएँगे। हम सभी बच्चे बहुत उत्साहित थे इस जगह की यात्रा करने के लिए। कक्षा-अध्यापक ने हम सभी बच्चों को बताया कि 21 दिसंबर को सारे बच्चे प्रातः 8.00 बजे तक अपने स्कूल आ जाएँगे। मैं और मेरे भइया 5 बजे उठकर अपनी यात्रा के लिए सामान एकत्रित करके रख रहे थे। जैसे—स्वेटर, शॉल, मोजे, दस्ताने आदि, क्योंकि ठंड के मौसम में गर्म कपड़े चाहिए। मैंने अपनी तरफ से कुछ दवाइयाँ भी रख लीं। माँ और मैंने मिलकर अपनी यात्रा के लिए कुछ पकवान और नाश्ता तैयार किया। चलिए, देखते हैं कि हमारी यात्रा कैसी रही?

मैं और मेरे भइया तैयार होकर निकल गए स्कूल के लिए। हम स्कूल पहुँचे तो वहाँ पहले ही काफी बच्चे आ चुके थे। और कुछ लोग बाकी थे। आखिर हम सब एक ग्रुप में एकत्रित हो गए। थोड़ी ही देर में हमारे स्कूल में तीन बसें आ

खड़ी हुई। सारे बच्चे बस में चढ़कर अपनी-अपनी जगह ग्रहण करने लगे। मुझे खिड़की के पास बैठना था, इसलिए मैंने भइया के साथ खिड़की वाली सीट ली। हमें 'लखनियादरी' पहुँचने में मात्र 4 घंटे का समय लगने वाला था। बस में कुछ लोग अपने साथियों के साथ गाना गा रहे थे तो कुछ लोग चुटकले सुनाने में लगे थे। कोई खिड़की से कैमरे एवं मोबाइल से तस्वीरें खींच रहे थे। मुझे अलग-अलग इमारत, पुल-पहाड़, खेत-खलिहान, पहाड़ों की चोटियों की तस्वीरें खींचना अच्छा लगता है। जब हमारी बस गाँव के खेतों के पास से गुजर रही थी तो सरसों, आलू एवं टमाटर के पौधे, आम के बगीचे, अमरूद, केले, चकोतरा एवं नींबू के पेड़ों को देखकर बहुत ही अच्छा लगा। वहाँ इतने सारे पेड़ों को देखकर मन प्रसन्न हो गया। उसी ठंड में हल्की-हल्की-सी सूरज की किरणें आ रही थीं। अति सुंदर प्रकृति का नजारा था। मुझसे अब रहा नहीं गया। मैंने भी कैमरा उठाया और प्रकृति को कैमरे में कैद करना शुरू कर दिया।

ये सब कुछ देखते-देखते आखिर हम सब लोग 'लखनियादरी' पहुँच ही गए। बस से उतरने के बाद आगे बढ़ते चले गए और देखा, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, हरे-भरे पेड़-पौधे और छोटे-छोटे फूल के पौधे भी। जब हम आगे बढ़े तो देखा कि कुछ और स्कूल एवं कॉलेजों के बच्चे भी

घूम रहे थे, क्योंकि ये जगह ही बहुत अच्छी है। सभी इधर-उधर समूह में बैठे थे।

थोड़ी देर आराम किया। सफर में अकसर बैठे रहने से थकावट महसूस होने लगती है। ये सब देखकर बहुत अच्छा लग रहा था। सब अलग-अलग तरह के पकवान जैसे—चिप्स, नमकीन, बिस्कुट, कुरकुरे ब्रेड-पकौड़े, कटलेट आदि लाए थे। थोड़ा-थोड़ा सभी का स्वाद लिया।

थोड़ी ही देर बाद सब मिलकर पहाड़ों पर चढ़ने लगे। इतने ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर कुछ छोटे-छोटे पौधे तो कुछ बड़े-बड़े पेड़ दिख रहे थे। और कुछ ऐसे जंगली पौधे, फल, जड़ी-बूटी थे जो दिखने में सामान्य लग रहे थे। पर सर ने बताया कि ये सब जंगली पेड़-पौधे, फल, जड़ी-बूटी हैं। इसलिए कोई भी इसे न खाए। हम सबने पहाड़ों पर चढ़कर खूब उछल-कूद की, और कुछ तस्वीरें भी खिंचवाईं। पहाड़ों पर चढ़ने में अच्छा लग रहा था। हर जगह एकदम खुला-खुला था। सर ने हम सबको पहाड़ों के कोने पर खड़े होने से मना कर दिया था।

हमलोग अब धीरे-धीरे पहाड़ों से नीचे उतरने लगे। उतरना बड़ा आसान था, लेकिन पहाड़ों पर चढ़ना बहुत मुश्किल था। अब हमलोग नीचे उतर आए। सभी लोग झील की ओर जाने लगे।



पानी ठंडा था और बड़े-बड़े पत्थर थे जिस पर लोग खड़े होकर फोटो खिंचवा रहे थे और कुछ लोग पानी में भी खेल रहे थे। काफी समय हो गया था और अब हमलोग अपना-अपना सामान लेकर बस की ओर चल दिये। शाम होने को आ रही थी। बस चलने लगी। हम सबने जो आते वक़्त सीट ली थी, वही सीट अब दोबारा ले ली। जैसे ही बस चली तो बस की छत पर कुछ बंदर आ गए और उछल-कूद करने लगे। कुछ बंदर पेड़ों पर इधर-उधर भी उछल-कूद करते दिखाई दे रहे थे। सब लोग उन्हें देखकर बहुत उत्साहित थे। थोड़ी ही देर में अँधेरा हो गया।

देखते-देखते हम कब वापस स्कूल पहुँच गए पता ही नहीं चला।

Tourists' Delight : Mumbai and Goa

Himadri Singh

During the first week of November, we went to Mumbai from Varanasi. My father had reserved the tickets almost two months in advance. The train was to arrive at Varanasi at 5 p.m. We were busy in packing things since the journey was to begin in next two days. Some new things were bought and old ones were discarded. On the date of journey we started for the station quite early. I was very excited.

We went to the platform. We carried our luggage to the place where the reserved compartments were expected to halt. Gradually the passengers started to gather. People came with various types of bags and suitcases. Some carried their beddings too. Time for the train's arrival was approaching. We were getting very excited.

In the meantime, railway authority announced that the train was about half an hour late. My father checked the reservation-list by this time. Anyway time passed. The train arrived on the track. People started moving to and fro. It seemed as if the whole station was moving.

As soon as the train stopped people started jostling near the compartment doors. We stood away with our

belongings. One gentleman shouted at the people and told them to stand in the queue. Luckily people listened to him. We also stood there and gradually got in. We found out our seats and kept the luggage properly.

After a while the train moved. People were at ease. I took a seat by the window. It was nice to see outside. It was dusk. The sky looked beautiful in multi-colour. Gradually it grew dark. Passengers started taking dinner. We also took our dinner and went to sleep. In the morning we had tea at Lokmanya Tilak Terminus, Mumbai from where we went to a hotel. Outside the weather was pleasant.

Next morning sight-seeing started with *darshan* at Sidhi Vinayak and Haji Ali Dargah near the seashore. It was very hot, so we spent some time in a very popular shopping mall near Dargah which offered a variety of purchases. In the evening, we went to the Gateway of India by bus after visiting the Tarapore Fish Aquarium at Marine Drive where we saw scores of fishes including the Piranha which can swallow a human within seconds. After this we visited Juhu Beach and played along the sea shore and enjoyed *bhelpuri*, *panipuri*, etc.



On the fourth day, we visited the Essel World and Water Kingdom. I was very excited when we entered the Essel world. After lunch in the Essel World, we entered the Water Kingdom. It was a dream come true to me! I enjoyed lots of rides, artificial waves and greenery with my family. It was an unforgettable moment for me.

At night we boarded the train to Goa. On the fifth day, in the afternoon we reached Goa and checked in the hotel. In the evening, we visited some of the sea beaches like Calangute and Baga where we enjoyed the motor sports.

On sixth day, we took a bus for early morning trek to Baga Beach to enjoy the music of sea water at the shore. In the afternoon we visited Mangeshi Temple and the oldest church of St. Xavier. In

the evening, my family visited Dona Paula Beach. We spent some hours on the cruise and enjoyed cultural programmes. It was a fantastic day for me!

On the morning of the seventh day, we left for Mumbai by train and from there we boarded the bus for Mahabaleshwar.

On Eighth day, we found ourselves in the shivering environs of Mahabaleshwar which is a small and lovely hill station. I trekked to many hill points like Echo, Dinosaur, etc whole day. On the way, we visited the strawberry garden. In the evening, we went to another hill station Panchgani by bus.

Next morning we left for Mumbai and there boarded the train to Varanasi.

Jaipur : The Pink City

Nidhi Sharma

In the month of October me and my family went to Rajasthan. It was for the first time that I was visiting Rajasthan. How could I forget the journey?

On the fixed day, we packed up our luggage and started for the station at 11 pm. Half an hour before the scheduled time of the train we reached the station and the train arrived.

My father asked me "Do you know there are many cities in Rajasthan?"

I asked, how many? My Father said, "Jaipur, Udaipur, Ajmer, Kota, Jodhpur, Jaisalmer, Barmer, Marwar, Bikaner, etc."

I asked my father, "Today, in which place are we going?"

"Jaipur," he said.

"Jaipur is also known as the Pink City!" a local man said. We looked around, a tall man was standing and in his one hand he was holding a long wooden stick. He was wearing a red turban and half frock like suit and *lungi* and I knew

this dress is worn only by *Rajasthani* men.

As the train moved, we looked out. It was really a beautiful scene. At about 7 a.m. our train reached Jaipur. There was a maddening rush and noise at the station.

We reached hotel and booked a cart and started our journey.

We first turned into a market and enjoyed a puppet show. It was a very good experience for me. We bought different things and, then we saw Ghummar dance.

Next day we planned to visit famous historical places in Jaipur.



We saw Jodha Palace, Shish Mahal, Hawa Mahal, Jantar Mantar, a famous temple Kaali Mandir, Jal Mahal, Vijay Stambh, City Palace and Amer Fort.

Next day my father suggested us to visit Taj Mahal in Agra. We happily agreed to this.

My father told us that that the Taj Mahal was built by the Mughal Emperor, Shahjahan. He had built it in the memory of his beloved wife Mumtaz Mahal. It is a world famous mausoleum.

When I saw beautiful Taj then there was only one thing was in my mind.

"Unbeliveable!"

I was surprised to see it which I can't explain in words.

The Taj Mahal in Agra is one of the seven wonders of the world as well as a UNESCO World Heritage side. It is an iconic example of Mughal architecture.

The Taj gave us delight and an other side the holy river Yamuna gave us the peace mind.

It was my first visit to the cities of historical importance. I returned home unwillingly and carried away in mind a happy memory of my visit to the wonderful historical monuments.

WELCOME TO NEW DELHI WORLD BOOK FAIR 2015

Are You

- ♦ A School/NGO/Publisher of Children's Pleasure Reading Books
- ♦ A Govt. Organization engaged in promotion of children's reading habit
- ♦ A Newspaper, Magazine or Social Media for children
- ♦ An Individual Expert in the field of Children's Literature

And do you want to

- ♦ Stage a skit/play on books and reading
- ♦ Hold a session/workshop/session on books and reading
- ♦ Organize a panel discussion and/or reading session
- ♦ Hold a seminar/discourse/talk on Children's Literature
- ♦ A Children's Authors' meet
- ♦ Any event aimed at promoting reading habit among children.....

We can provide you a forum in the *Children's Pavilion*

New Delhi World Book Fair

Pragati Maidan, New Delhi

14-22 February 2015

Interested?

Then write to The Director, National Book Trust, India, Nehru Bhawan, 5 Institutional Area, Phase II, Vasant Kunj, New Delhi 110070 giving details about your organization/you and the proposed event (s) with date (s) by 31 Dec. 2014.

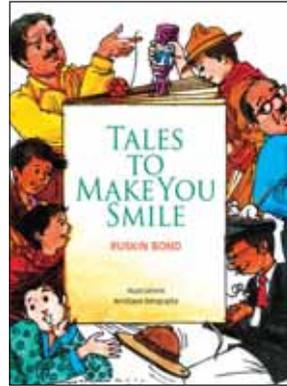
So, don't be late. Hurry up!

Book Review

Tales to Make You Smile

This is an interesting collection of seven tales that amuse the readers. The stories such as Be Prepared, Pret in the House, White Mice and Home are funny and delightful as they capture the innocence, imagination and curiosity of growing up children.

Ruskin Bond has authored over 500 books which have established him as one of India's most beloved writers.



Tales to Make You Smile

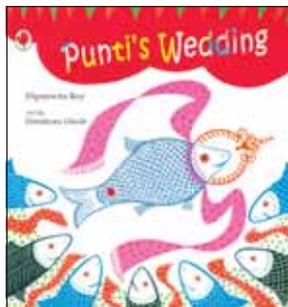
Ruskin Bond

Illustrated by Amitava Sengupta

National Book Trust, India

₹ 90.00

56pp



Punti's Wedding

Dipanwita Roy

Illustrated by Debabrata Ghosh

Translated by Indrani Barua

National Book Trust, India

₹ 40.00

20pp

Punti's Wedding

A sensitive tale about a pond and the marriage of two fishes and how the entire episode brings to life some existential issues which need to be addressed for a harmonious living. The commendable part is the contribution of the kids in managing a crisis situation.

This title was developed in an author-illustrator workshop held in Goa from 26-29 June, 2012.



NEW DELHI
WORLD BOOK FAIR

ENSURE YOUR
PARTICIPATION IN
THE LARGEST
INTERNATIONAL
BOOK FAIR OF
THE AFRO-ASIAN
REGION

NEW DELHI
2015
WORLD
BOOK
FAIR

14 TO 22
FEBRUARY
2015
PRAGATI MAIDAN
NEW DELHI
DAILY
11 AM TO 8 PM

- Guest of Honour Country - Singapore
- Focus Country - South Korea
- CEOspeak... a forum for publishing
- New Delhi Rights Table | Authors' Corner
- Theme & Children's Pavilion
- Cultural Programmes

SG  BOOKS
GUEST OF HONOUR COUNTRY - SINGAPORE



Korea Focus Country 2015
New Delhi World Book Fair



Organiser

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

Ministry of Human Resource Development Government of India

Nehru Bhawan, 5 Institutional Area

Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110 070 (India)

Phone: 91-11-26707700 ● Fax: 91-11-26707846

Website : www.nbtindia.gov.in

www.newdelhiworldbookfair.gov.in



Co-organiser

इण्डिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन

INDIA TRADE PROMOTION ORGANISATION

Pragati Bhawan, Pragati Maidan, New Delhi-110 001

Website: www.indiatradefair.com